B.com Part - II Semester

Business organisation and Management (1)

classmate

Date ____
Page ____

वैज्ञानिक प्रबंध

Scientific Management

Q:— वैज्ञानिक प्रबंध से क्या समझते है। इसके कौन-कौन से लक्षण अथवा विशेषतायें है।

Ans — वैज्ञानिक प्रबंध से यह आशय है कि आप वास्तव में क्या करना चाहते है तथा उसको करने के सबसे उत्तम तरीका क्या है। वैज्ञानिक प्रबंध का उद्देश्य सबसे अच्छा तरीका चुनने से है। वैज्ञानिक प्रबन्ध का सिद्धांत कम से कम मानव श्रम से ज्यादा से ज्यादा उत्पादन करना है यह सिद्धांत मुख्यतया छोटे व्यवसाय में लागू होता है।

वैज्ञानिक प्रबंध की परिभाषा

प्रमुख विद्वानो द्वारा दी गई परिभाषा निम्न है —

1- सेलडन के अनुसार — "वैज्ञानिक प्रबंध किसी उद्योग में उसके प्रबंधकों के द्वारा निर्धारित योजना को उस प्रकार चलाता है जिससे उसके उद्देश्य की पूर्ति प्रक्रिया में लाभ की जा सके।"

2 एफ. डब्ल्यू टेलर के अनुसार — "वैज्ञानिक प्रबंध आपके यह जानने की कला है कि आप लोगों से यथार्थ में क्या कराना चाहते है तथा यह देखना चाहते है कि वे उसको सुन्दर तथा सस्ते से सस्ते ढंग से करें।"

3- जोन्स के अनुसार — "वैज्ञानिक प्रबंध प्रशासन सम्बन्धी नियमों का समूह है ताकि संगठन में नवीन अनुशासन का समन्वय, नियंत्रण तथा उत्पादन पद्धति से कराया जा सके।"

4- पीटर एफ ड्रकर के शब्दो में, "वैज्ञानिक प्रबंध कार्य का संगठित अध्ययन है, कार्यों के सरलतम भागों का विश्लेषण है तथा कार्य के प्रत्येक भाग में कर्मचारियों के कार्य निष्पादन का विधिवत सुधार है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं का अध्ययन करने के पश्चात् निष्कर्ष रूप में सरल परिभाषा निम्न शब्दों में दी जा सकती है, "वैज्ञानिक प्रबंध सामूहिक प्रयासों की पद्धति एवं संगठित प्रणाली है जो वैज्ञानिक अन्वेषण, विश्लेषण एवं प्रयोगों पर आधारित है तथा जिससे सभी पक्षकारों को लाभ होता है।

वैज्ञानिक प्रबंध के लक्षण अथवा विशेषताएँ-

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययन के पश्चात इसके निम्न लक्षण अथवा विशेषताएं हैं —

(1) निश्चित योजना — वैज्ञानिक प्रबंध के सबसे मुख्य एवं प्रधान लक्षण यह है कि प्रत्येक कार्य को आरम्भ करने से पूर्व एक निश्चित योजना तैयार की जाती है। सारा कार्य उसी योजना के अनुरूप सम्पन्न होती है।

(2) वैज्ञानिक विश्लेषण तथा प्रयोग — किसी भी योजना को कार्यान्वित करने से पूर्व कुशल प्रबंधक उसके विभिन्न अंगों का वैज्ञानिक विश्लेषण एवं प्रयोग करके देख लेते हैं कि उसकी उपयोगिता तथा उपयुक्तता किस सीमा तक प्रमाणित होगी। टेलर के अनुसार "वैज्ञानिक प्रबंध 75% विश्लेषण तथा शेष 25% सामान्य बुद्धि है।" इस कारण वैज्ञानिक प्रबंध में विश्लेषण के साथ-साथ सूझ बूझ तथा प्रयोग पर भी बल दिया जाता है।

(3) नियमों का समूह — प्रबंध की वैज्ञानिक व्यवस्था के लिए निश्चित की हुई योजना के अनुरूप ही नियमों का निर्माण होता है तथा उनका प्रयोग प्रायः समूह रूप से किया जाता है।

(4) सामयिक प्रयोग — वैज्ञानिक प्रबंध में समय-समय पर उत्पन्न होने वाली समस्याओं का हल तुरंत उचित प्रयोगों द्वारा निकाला जाता है। अतएव इसमें सामयिक प्रयोग होते रहते हैं।

(5) मितव्ययिता — वैज्ञानिक प्रबंध की आधारशिला ही मितव्ययिता है। इसको लागू करने के लिए उत्पादन के समस्त अनावश्यक तत्वों का विनाश किया जाता है और यह प्रयत्न किया जाता है कि न्यूनतम व्यय पर अधिक से अधिक उत्पादन हो।

(6) श्रमिकों की कार्यक्षमता में वृद्धि — मितव्ययिता के साथ-साथ श्रमिकों की कार्यक्षमता का भी ध्यान रखा जाता है। ऐसी कोई भी मित-व्ययिता की योजना लागू नहीं की जाती जिससे कार्यक्षमता का ह्रास होता है। अतएव वैज्ञानिक प्रबंध की प्रत्येक योजना में श्रमिकों की कार्यक्षमता का सबसे अधिक ध्यान रखा जाता है।

(7) उत्तरदायित्व की सीमा — पहले छोटी मात्रा में उत्पादन होने के कारण उत्तरदायित्व एक ही व्यक्ति के कन्धों पर होता था। किंतु आज बड़े पैमाने पर उत्पादन होने के साथ-साथ उत्तरदायित्व भी बढ़ गया है। अतएव उसकी सीमा को निर्धारित करके तथा उसमें कमी करके लाना वैज्ञानिक प्रबंध की एक विशेषता है। इस प्रकार वैज्ञानिक प्रबंध में प्रत्येक व्यक्ति का सीमित उत्तर-दायित्व होता है।

(8) दृढ़ता — नियमों का सही रूप से पालन करने के लिए प्रबंधकों को अपने व्यवहार में इसे लाना आवश्यक होता है और एक बार दृढ़ निश्चय अपनाने के बाद फिर उसमें किसी प्रकार का अनावश्यक परिवर्तन नहीं किया जा सकेगा।

(9) निश्चित उद्देश्य — प्रबंधक के सामने कार्य संचालन से पूर्व एक निश्चित उद्देश्य होना आवश्यक है और उसके सारे प्रयत्न उसकी पूर्ति के लिए ही होते हैं।

X ———— X ———— X

Dr. Raj Kumar Prasad
Associate Professer
Deptt. of Commerce
Shershah College SASARAM